हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): DIPTI DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट न. एवं दिनांक (Test No. & Date): 6 8 17/09/2017

रोल न. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	4	8	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

अच्छा प्रयास
सभी आवश्यक प्रश्नों का उत्तर लिखने का प्रयास करें।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 111 1/2

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत दोहा संत काव्यधारा के अमिट हस्ताक्षर कवि कबीरदास की कविताओं के संकलन कबीर ग्रंथावली से लिया गया है जिसमें कवि गुरु के महत्व को रेखांकित कर रहा है।

व्याख्या: कबीर दास जी का विचार है कि जगत की नश्वरता का ज्ञान सत्गुरु के माध्यम से ही हो सकता है। सतगुरु ने प्रीति रूपी तीर को जब अपने शिष्य की ओर साध कर चलाया है तभी उसे इसका ज्ञान होता है कि ब्रह्म ही सत्य है।

काव्य सौंदर्य:

1. कबीर यहाँ पर गुरु का महत्व बतला रहे हैं अन्यत्र भी उन्होंने कहा है "गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागों पाँव"
2. ब्रह्म का स्वरूप उनका निर्गुण है जो शंकर के अद्वैतवाद से प्रभावित है।
3. भाषा सधुक्कड़ी (बाँहण - पश्चिमी हिन्दी) प्रीति (तत्सम) है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4- उपमेय-उपमान विधान अर्थ की गहराई को बढ़ा देता है। 'प्रीति सों'

5- वर्तमान में जब गुरु-शिष्य संबंध बाजार की शक्ति से संचालित हो रहे हैं, तो ये पंक्तियाँ अत्यन्त प्रासंगिक बन पड़ी हैं।

6- मुक्तिबोध भी ब्रह्मराक्षस में गुरु के सज्जन-उर शिष्य होना चाहते हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पद प्रेम और वात्सल्य के कवि सूरदास की रचना सूरसागर से लिया गया है जिसमें कवि गोपियों के विरह का मार्मिक चित्र खींच रहा है।

व्याख्या: गोपियाँ कृष्ण के मथुरा चले जाने से वियोग की अग्नि में दग्ध हैं। वे वीणा के संगीत, से मृगों एवं चन्द्रमा के माध्यम से रात्रि के वातावरण में विरह का चित्रण किया गया है। वे कहती हैं कि जबसे कृष्ण से वे बिछुड़ी हैं उनके नयनों से सदा अश्रुधार बह रही है। चंद्रमा की शीतलता उन्हें अग्नि की भाँति ही दग्ध कर रही है और इस अग्नि से बचाने के सभी जतन असफल हो रहे हैं। विरह-वियोग से बाहर आने का एकमात्र उपाय प्रभु का दर्शन है।

कृष्णगीतभाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

काव्यगत सौंदर्य:

1. सगुण भक्ति की साख्य भक्ति के माध्यम से गोपियाँ कृष्ण भक्ति की स्थापना कर रही हैं।

2. साहचर्य मूलक प्रेम एवं उससे उत्पन्न वियोग का मार्मिक चित्र खींचा गया है।

3. वीणा को दूर रखने से रात्रि के चले जाने एवं मृगों तथा चन्द्रमा के ढल जाने के माध्यम से अप्रस्तुत विधान को व्यक्त किया गया है।

4. गोपियों के इस विरह की तुलना नागमती के वियोग से की जाती है।

5. विरोधाभास - 'शीतल चंद्र अगिनि सम लागत'

6. भाषा: ब्रज की चरम कलात्मकता

7. पद में स्वाभाविक गेयता है।

5 1/2 / 10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

संदर्भ व प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'जनकवि' नागार्जुन की कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गयी हैं जहाँ नागार्जुन अपने ऐंद्रिक अनुभवों से हिमालय का सौंदर्य देख पा रहे हैं।

व्याख्या : यहाँ नागार्जुन कालिदास के 'व्योमप्रवाही गंगाजल' एवं यक्ष यक्षिणियों के मिथक पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए कह रहे हैं कि वह कपोल कल्पना थी। उन्होंने तो हिमालय को सर्दियों में कैलाश पर्वत के शिखर पर विशाल बादलों को आपस में भिड़कर चमकते-गरजते देखा है।

टिप्पणी:

1. यहाँ नागार्जुन की मार्क्सवादी दृष्टि उभरी है जो भौतिकतावादी है। इसमें प्रत्यक्ष जगत के अनुभवों से चेतना निर्मित हो रही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. कुछ मार्क्सवादी आलोचकों ने इस पंक्ति पर प्रतीकों का आरोपण करके व्याख्या की है जिसमें 'महामेघ' उस क्रान्ति को द्योतित कर रहा है जो पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध होने वाली है।

3. संश्लिष्ट बिंब का निर्माण किया गया है (गरज-गरज मिड़ते देखा है)

4. भाषा तत्समी प्रकृति की है

5. पंक्तियों में आन्तरिक लय है जो भाव की व्यंजकता के अनुकूल है

6. ध्वनि मैत्री (महामेघ की झंझानिल) है

बहुत अच्छा

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।...

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पडिच्छेद आधुनिक चेतना से युक्त प्रयोगवादी कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की सृजन तत्व की व्याख्या करने वाली कविता 'असाध्यवीणा' से ली गयी है जो आंगन के पार द्वार में संकलित है। इन पंक्तियों में अज्ञेय प्रियंवद की साधना प्रक्रिया पर प्रकाश डाल रहे हैं।

व्याख्या: प्रियंवद वीणा के सम्मुख अपनी तुच्छता को अनुभव करते हुए उस विशाल किरीट वृक्ष का साक्षात्कार कर रहा है जहाँ उसकी विशालता उसे विजड़ित कर रही है। प्रियंवद किरीट वृक्ष पर होने वाले प्रत्येक गतिविधि से आत्म विस्मृत हो रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

टिप्पणी :

1. सृजन तत्व में परम्परा का प्रतीक किरीट वृक्ष है जिसके माध्यम से अज्ञेय साहित्य में 'परम्परा सिद्धान्त' को व्याख्यायित कर रहे हैं।

2. इन पंक्तियों के माध्यम से अज्ञेय सृजन प्रक्रिया मे अहं के विसर्जन को मुख्य तत्व बताते हैं।

4. भाषा तत्समी है। (विजड़ित)

5. मुक्त छंद है।

6. आंतरिक लय है।

7. उपमेय-उपमान विधान (वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।) दर्शनीय है।

8. आधुनिक रहस्यवाद परिलक्षित होता है।

5 1/2
/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

संदर्भ व प्रसंग: कठिन समय के कवि की उपमा से विभूषित कवि "मुक्तिबोध' की कविता 'ब्रहम राक्षस', जो कि 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में संकलित है, से ली गयी ये पंक्तियाँ ब्रहम राक्षस के दुखद अंत व उसके कारणों को व्याख्यायित कर रही है।

व्याख्या: मुक्तिबोध ब्रहम राक्षस के एकान्त में अपने ज्ञान के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन करने एवं इसके दुखद अंत होने को चित्रित कर रहे है। वे कहते हैं कि ज्ञान का पुतला ब्रहम राक्षस एकान्तवासी है और वह अपने मन एवं व्यक्तित्व के दो पक्षों के मध्य संघर्ष के कारण दुखद अंत को प्राप्त होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

टिप्पणि :

1- इन पंक्तियों मे ब्रह्मराक्षस के प्रतीक के माध्यम से मुक्तिबोध ने अपना आत्मसंघर्ष एवं एक मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्म संघर्ष को व्यंजित किया है।

2. 'दो कठिन बातों' के माध्यम से मन के चेतन व अवचेतन के मध्य संघर्ष को चित्रित किया गया है।

3- फैंटेसी शिल्प के माध्यम से अमूर्त का मूर्तिकरण किया गया है।

4- 'कोठरी मे अपना गणित' के माध्यम से संवेदनाहीन ज्ञान की सीमा को व्यक्त किया गया है।

5. भाषा स्वाभाविक है।

6. बिंबधर्मी पंक्तियां है। (दो कठिन बातें)

7. आन्तरिक लय है।

8- उच्चाटित रूप भी व्यक्त किया गया है।

(औं') (!!)

अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सृजन का महत्व अज्ञेय के साहित्यिक संसार में सर्वत्र दिखायी देता है। इसके महत्व को अपने अपने अजनबी में वे कुछ इस प्रकार व्यक्त करते हैं: ईश्वर भी शायद स्वेच्छाचारी नहीं। उन्माद से बचने के लिए उसे भी सृजन करना आवश्यक है।"

इसी महत्व के कारण अज्ञेय ने असाध्यवीणा रची जिसमें सृजन तत्व को पूर्णता में पकड़ने का प्रयास है।

असाध्यवीणा में सर्वप्रथम उन विशेषताओं - योग्यताओं का अन्वेषण किया गया है जो एक सर्जक में अनिवार्य है। राजा की मूलभूत समस्या है' मेरे हार गये सब कलावंत / सबकी विद्या हो गयी अकारथ, दर्प चूर। कोई ज्ञानी गुणी न इसे साध सका।

स्पष्ट है कि विद्या, ज्ञान व गुण जब 'दर्प' से युक्त हो तो वे सर्जक नहीं बना सकते।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रियंवद इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। वह कहता है राजन मैं तो कलावन्त हूँ नहीं / शिष्य साधक हूँ।

अर्थात् प्रियंवद के व्यक्तित्व में वह 'दर्प' नहीं है जो शेष कलावंतों में है। स्पष्ट है कि सर्जक के अन्दर 'अहं' का भाव नहीं होना चाहिए।

सृजन के लिए 'अर्ह' विशेषताओं के उपरान्त यह कविता सृजन की प्रक्रिया की भी व्याख्या करती है। सृजन की प्रक्रिया का आरंभ वहाँ होता है जब प्रियंवद वीणा के सम्मुख एक शिशु की भाँति अहस्तन्य भाव से उपस्थित होता है। सृजन की प्रक्रिया नितांत वैयक्तिक होती है क्योंकि 'भूल गया था केशकम्बली राजसभा को। सृजन तत्व की विराटता का प्रतीक 'किरीट तरु' परम्परा का भी प्रतीक है। जब सर्जक अपनी परम्परा से साक्षात्कार करता है, तब सर्जना आरंभ होती है।

सृजन की प्रक्रिया के पश्चात कविता सृजन के स्वरूप की व्याख्या

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करती है। जब सर्जक उस विशाल एवं समृद्ध परम्परा से निर्वैयक्तिक भाव से एकाकार हो जाता है तभी 'अवतरित हुआ संगीत/स्वयंभू / जिसमे सोता है ब्रह्म का मौन / अशेष प्रभामय।

स्पष्ट है कि सृजन का स्वरूप वही है जिसे भारतीय परम्परा में ब्रह्म कहा गया है। आचार्य शुक्ल जी ने भी कविता को भावयोग की संज्ञा दे, उसे मुक्ति का साधन माना है। सृजन का स्वरूप वही है जिसे भारतीय काव्यशास्त्र में 'वेद्यान्तर स्पर्श शून्यता' एवं 'ब्रह्मानंद सहोदर' कहा गया है। अज्ञेय ने भी उसे 'अविभाज्य / अनाप्त / अद्रवित अप्रमेय' कहा है।

सृजन के इस स्वरूप के अवतरित होने के प्रभाव के माध्यम से अज्ञेय ने सृजन के प्रभाव की व्याख्या की है। इसका प्रभाव किसी को बहुत बहुत दिनों के बाद सोंधी अन्न की खुदबुद के रूप में दिखता है, तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी को 'भरी तिजोरी में सोने की खनक' की भाँति। राजा ने अलग सुना और रानी ने अलग।

अर्थात् सृजन का प्रभाव सभी पर अपने गुण-धर्म के अनुसार पड़ता है जिससे सभी अपने 'स्वधर्म' मे जुट जाते हैं और 'युग पलट' जाता है।

स्पष्ट है कि अज्ञेय ने असाध्यवीणा में मिथकीय चरित-कथा ढाँचे के भीतर एक बेहद संभावनाशील रचना रची है जो 'सृजन के माध्यम से ही सृजन की व्याख्या' करती है। इस कविता में अज्ञेय सृजन तत्व को पूर्णता में पकड़ पाने से सफल रहे हैं।

बहुत अच्छा

$11\frac{1}{2}$ / 20

Copyright - Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मध्यवर्ग की चेतना निम्नवर्ग एवं उच्चवर्ग के भीतर मध्य उस 'पेण्डुलम' की भाँति होती है जो कभी उसे उच्चवर्ग की भाँति 'आत्मचेतस' तो कभी इस शोषणकारी वर्ग के विरुद्ध विद्रोह से युक्त 'विश्वचेतस' बनाती है। मध्यवर्गी बुद्धिजीवी के इसी आत्मसंघर्ष को मुक्तिबोध की कविताएं व्यंजित करने का प्रयास करती है। ब्रह्मराक्षस इसी प्रयास का प्रतिफल है।

ब्रह्मराक्षस आजादी के बाद की कविता है जब औपनिवेशिक दासता से मुक्ति के साथ पूंजीवाद दोनो महायुद्धों के पश्चात् शीतयुद्ध में अपना विद्रूप चेहरा लेकर सामने आया। इसी पूंजीवादी व्यवस्था का उत्पाद मध्यवर्ग है। मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्म संघर्ष को व्यक्त करने के लिए मुक्तिबोध ने भारतीय मिथक ब्रह्म राक्षस को चुना।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्म राक्षस ने अपने नैतिक मन की इच्छाओं को अपने वैयक्तिक हानि-लाभों से चालित करते हुए दमन करता है, किन्तु वह पूर्णतः इन इच्छाओं पर पार नहीं पा सका है। उसका आत्मचेतस मन रक्तपायी वर्ग से नाभि-नाल बद्ध होकर व्यवस्था का लोभ तो उठाना चाहता है, किन्तु अवचेतन उसे बार-बार सीढ़ियों से नीचे गिराकर अपनी ओर आकर्षित करता है।

कविता प्रतीकों के माध्यम से मध्यवर्गी बुद्धिजीवी के मानसिक पक्षों का भी विश्लेषण करती है। ब्रह्म राक्षस के व्यक्तित्व को 'खूब ऊँचा एक जीना सांवला / जिसकी अंधेरी सीढ़ियाँ / एक अभ्यंतर निराले लोक की' के माध्यम से व्यंजित किया गया है

स्पष्ट है कि उसका अवचेतन उसे विश्वचेतस बनाना चाहता है। इस आत्मचेतस व विश्वचेतस का संघर्ष अच्छे-बुरे का संघर्ष नहीं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वरन अच्छे व उससे अच्छे के मध्य लगा है।

स्पष्ट है कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी अपने व्यक्तित्व का विकास भी चाहता है, किन्तु साथ ही व अपने युगीन उत्तरदायित्वों की वजह से वह गणितीय दशमलव के बिंदुओं तक की शुद्धता वाला विश्वचेतस भी होना चाहता है। इसी संघर्ष में नीच ट्रैजडी घटित होती है जिसका समाधान मुक्तिबोध 'सजल-उर शिष्य' बनकर करना चाहते हैं।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की मानसिक व्यथा एवं उससे उत्पन्न छटपटाहट को मुक्तिबोध सहमशक्स में चित्रित करने में सफल रहे हैं।

बहुत अच्छा

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कथ्य और रूप का द्वन्द्व साहित्यिक विमर्श में सर्वाधिक विवादित विषयों में रहा है। नागार्जुन जो स्व-उद्घोषित 'जन कवि' है इन दोनों के मध्य सफल समन्वय के उदाहरण है। 'बादल को घिरते देखा है' में यह समन्वय स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

यह कविता आधुनिक काल के काव्यरूपों 'लम्बी कविता', के समकक्ष ठहरती है जो किसी विषय को पूर्णता में पकड़ने के प्रयास में लम्बी होती है। नागार्जुन हिमालय के सौंदर्य का वर्णन करते है तो अपने पूर्वज्ञान एवं प्रत्यक्ष अनुभवों का तुलनात्मक विवेचन भी करते हैं। इस कारण कविता लम्बी हुयी है और पूर्णता को पकड़ने में भी सफल रही है।

भाषा के तौर पर इस कविता में तत्सम भाषा का प्रयोग किया गया है। 'अमल-धवल गिरि के शिखरों'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

के द्वारा तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है।

यह कविता अपने बिंबों के कारण सर्वाधिक सफल कविता है। विभिन्न संश्लिष्ट बिंबों के माध्यम से कविता का पाठन एक यात्रा का अनुभव देता है जो न केवल दृश्य सौंदर्य का वर्णन करती है बल्कि किन्नर-किन्नरियों के देश की सांस्कृतिक यात्रा भी कराती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है:

नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है।

इस कविता की विशेषता यह है कि पाठक को हिमालय के सौंदर्य की ऐन्द्रिक अनुभूति कराने में सफल होती है।

कुछ मार्क्सवादी आलोचकों ने कविता पर प्रतीकों का आरोपण कर व्याख्या का प्रयास किया है। प्रतीकों में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अमल-धवल' गिरि के शिखरों' को पूंजीवादी सभ्यता एवं 'महामेघ' को सर्वहारा क्रान्ति का प्रतीक माना गया है।

अत: हम देखते हैं कि बादल को जिसे देखा है कविता अपने शैल्पिक कौशल के कारण उन शास्त्रीय प्रतिमानों पर भी खरी उतरती है जैसे कलावादी समीक्षक किसी कविता का मूल मानते हैं। इसके साथ ही यह भी कहना होगा कि कथ्य ही इस कविता का प्रधान तत्व है जो स्वयं इस 'रूप' को अनोखित किया है।

अच्छा

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

अज्ञेय के रचना-संसार में भाषा एक साध्य है। वे स्वयं लिखते है कि "मैं उन कवियों में से हूं जो अच्छी भाषा को साध्य मानते हैं एवं ऐसे कवियों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।"

प्रश्न यह है कि स्वयं द्वारा निर्मित इस प्रतिमान पर अज्ञेय कितने खरे उतरते हैं? इसका परीक्षण उनकी प्रतिनिधि रचना असाध्यवीणा की काव्यभाषा के माध्यम से किया जा सकता है।

असाध्यवीणा 'सृजन तत्व' की व्याख्या की कविता है जिसमें सृजन की अर्हता, उसकी प्रक्रिया, उसके स्वरूप एवं उसके प्रभाव की व्याख्या की गयी है। इस कविता में भाषा भावों को धारण करने एवं उनको मर्मस्पर्शी ढंग से व्यक्त करने की सभी युक्तियों को जुटाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मूलत: भाषा तत्सम प्रकृति की है। कारण यह कि यह प्राचीन मिथकीय चरित-कथा पर आधारित कविता है। कविता राजा के दरबार एवं कलावंतों की परीक्षा एवं उनकी साधना प्रक्रिया का चित्रण करने के लिए ~~मिथकों~~ तत्सम शब्दों का प्रयोग करती हैं। ब्रह्म के स्वरूप की व्याख्या में यह उदा० द्रष्टव्य है - अवतरित हुआ संगीत/स्वयंभू अविभाज्य / अनाद्य / अप्रवित / अप्रमेय।

कविता में आधुनिक नई कविता की भाँति आकर्षक बिंबों का निर्माण किया गया है। इसके माध्यम से कविता को भावों की ऐन्द्रिक अनुभूति का माध्यम बना दिया गया है। कीट तक की विशलता को अत्यन्त आकर्षक रूप में चित्रित किया गया है। उसके कानों में हिमाशिखर रहस्य रहा करते थे / उसकी कटिबद्ध सी डालें इन पंक्तियों के माध्यम से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संश्लिष्ट बिंबों का निर्माण किया गया है।

प्रतीक योजना के आधार पर मूल्यांकन किया जाए तो यह काव्यभाषा अत्यंत सफल प्रतीत होती है। एक प्राचीन मिथक के भीतर से आधुनिक भाव को अभिव्यक्त करना अज्ञेय जैसे समर्थ कवियों की ही क्षमता हो सकती है।

प्रयोगवाद में भाषा की जिस नवीनता एवं उपमानों की नवीनता की मांग अज्ञेय स्वयं करते थे, वे इस कविता में उन मांगों को स्वयं भी पूरा करते दिखाई देते हैं। व्यक्तित्व व्यंजक विशेषणों जैसे 'केशकम्बलिन' के माध्यम से चित्रात्मक बिंब बनाते हैं।

अतः हम देखते हैं कि असाध्यवीणा की काव्यभाषा उन सभी उपादानों को एकत्रित करने में सफल रही है जो एक भाषा को सफल काव्य भाषा बना पाने में सक्षम होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय इस भाषा के माध्यम से ही अनुभूति एवं अभिव्यक्ति के मध्य की दीवार को 'विस्फोटक भर कर उड़ा' जाने में सक्षम रहे हैं।

अच्छा

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

ब्रह्म राक्षस कविता में 'दो कठिन पाटों बीच' पिस गये ब्रह्म राक्षस की 'नीच ट्रेजडी' के कारणों की पड़ताल मुक्तिबोध 'यह क्यों हुआ। क्यो यह हुआ।।' के प्रश्न के माध्यम से करते हुए 'मैं ब्रह्मराक्षस का सजल- उर शिष्य होना चाहता हूँ' के समाधान पर पहुँचते हैं।

प्रश्न यह है कि सजल-उर शिष्य के माध्यम से मुक्तिबोध किन उद्देश्यों की पूर्ति चाहते हैं?

कविता के आरंभ मे ही बताया गया है कि ब्रह्म राक्षस वेदों, पुराणों व आधुनिक चिंतको जैसे गांधी मार्क्स व एंजेल के सिद्धान्तों की नवीन व्याख्या करता है, किन्तु एकान्त कोठरी में अपना गणित करता रहा/ और मर गया।

स्पष्ट है कि ब्रह्मराक्षस कोरे ज्ञान का पुतला था। वह अपने ज्ञान को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज से जोड़ नहीं सका। इसी कारण 'नीच ट्रैजडी' घटित होती है। मुक्तिबोध इसी 'ट्रेजडी' से बचाने के लिए सजल उर शिष्य होना चाहते हैं। सजल-उर होने से तात्पर्य सामाजिक वास्तविकताओं का ज्ञान होना और उस ज्ञान से उपजी ज्ञानात्मक संवेदना से युक्त होना है।

एक अन्य अर्थ में ब्रह्म राक्षस के सजल-उर शिष्य होने का कारण मिलता है। ब्रह्म राक्षस आत्मचेतस से विश्वचेतस होना चाहता है। इसके लिए वह 'सब चिंतकों के पास वह सुख प्राप्त करने के लिए भटका।' किन्तु वह 'उलझे गणित मैदान में मारा गया'। ब्रह्म राक्षस का सजल उर शिष्य होकर मुक्तिबोध उसे उसके व्यक्तित्व के महत्व को बतलाना चाहते हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध पूंजीवाद की देन 'व्यक्तित्व' को पूर्णत: खारिज नहीं करते । आत्म-चेतस होते हुए भी विश्वचेतस बनने को संभव बनाने के लिए वे सजग एवं सक्रिय होना चाहते हैं।

अत: स्पष्ट है कि कवि अपने व्यक्तित्व के साथ सामाजिक सबों का साक्षात्कार कर युगीन उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए सजग एवं सक्रिय होना चाहता है।

8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हरिजन गाथा' भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की विद्रूपता को चित्रित करने वाली कालजयी रचना है।

हरिजन गाथा में समाज के कथित तौर पर उच्च वर्गों के द्वारा समाज के निचले तबके की दलित जातियों पर अत्याचार के क्रूरतम रूप को व्यक्त किया गया है। यह कविता 'ऐसा तो कभी नहीं हुआ था' से आरंभ होती है और एक नहीं/ दो नहीं/ तीन नहीं/ पूरे के पूरे/ बारह मनुपुत्रों के सौ-सौ मनुपुत्रों द्वारा जला दिये जाने की सुनियोजित योजना का पर्दाफाश करती है।

कविता का अगला परिच्छेद इस शोषणकारी घृणित व्यवस्था के विरुद्ध दलित चेतना के उदय एवं क्रान्ति तथा नेतृत्वकर्ता के रूप का चित्रण करती है। नागार्जुन कहते हैं कि 'दिल ने कहा दलित माओं के/ सब बच्चे अब बागी होंगे/ xx अंतिम विप्लव में सहभागी होंगे।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रान्ति के स्वरूप पर भी विचार करते हैं और घोषित करते हैं कि 'हिंसा और अहिंसा इसकी दो बहनें होंगी।' अर्थात् क्रान्ति हिंसक भी होगी।

क्रान्ति का पालन पोषण मजदूरों के बीच ही होगा, इसका स्पष्ट संकेत नागार्जुन नवजात बच्चे को मजदूरों के मध्य पालने पोषने के लिए भेजने के साथ देते हैं।

स्पष्ट है कि 'हरिजन गाथा' भारतीय सामाजिक व्यवस्था के शोषणकारी रूप के साथ ही नयी उभरती चेतना का भी चित्रण करते हैं।

आज भी जब उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में जातीय हिंसा के भड़कने की घटनाएं होती हैं तो बरबस ही यह कविता प्रासंगिक हो उठती है। दलित चिंतकों का उदय, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद का अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों के मध्य पैठ जमाना इसी शोषणकारी व्यवस्था है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

फलस्वरूप ही हुआ है।

अतः हम देखते हैं कि संवेदनशील कवि हृदय से युक्त नागार्जुन की यह कविता आज के परिदृश्य में भी प्रासंगिक बनी हुयी है।

अच्छा

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ यशपाल के उपन्यास दिव्या से ली गयी हैं जिसमे वे अपने भौतिकतावादी दर्शन को व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या: यशपाल कहते है कि समय प्रवाहमान है जीवन भी इसी समय से चालित होता है। प्रत्येक स्थिति चाहे वह अच्छी हो या बुरी बदलती अवश्य है। प्रकृति विनाश एवं संहार की शक्तियों से युक्त होने के कारण इस प्रवाह को संचालित करती है और यही उसकी नित्यता का रहस्य है।

टिप्पणि:

1. मार्क्स ने इसी विचार को द्वन्द्वात्मक भौतिकतावाद के माध्यम से व्याख्यायित किया है।

2. प्रसाद भी कामायनी में प्रलय एवं सृष्टि निर्माण के साथ इसी विचार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को देते हैं।

3. अज्ञेय 'संवत्सर' निबंध में समय के प्रवाहमान एवं संचालक होने के इसी विचार का समर्थन करते हैं।

4. भाषा तत्समी (साधु-असाधु) है-

5. वाक्य संक्षिप्त होने की वजह से प्रभाव शाली हैं।

6. वर्तमान में जब क्षणिक सुखों एवं दुखों के कारण जीवन समस्याग्रस्त होता है तो ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हो जाती हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ वैचारिक एवं बुद्धिपरक निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंध संग्रह 'चिंतामणि' के 'कविता क्या है' निबंध से ली गयी हैं।

व्याख्या: इन पंक्तियों मे कविता की महत्ता को स्थापित करते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं कि कविता ही मनुष्य को स्वार्थों से उपर उठकर सोचने की शक्ति देती है और वह विश्व व मानवमात्र के कल्याण के लिए प्रेरित करती है। कविता का यह गुण उसे भक्तियोग व कर्मयोग के समकक्ष बनाता है। मनुष्य को विश्वहृदय मे लीन करने के लिए कविता सशक्त माध्यम है।

टिप्पणी

1. आचार्य शुक्ल की यह रस की लोकमंगलवादी व्याख्या उनके आलोचना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की केंद्रीय दृष्टि है।

2. वर्तमान में साहित्य जब यौन कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया है, तो ये पंक्तियाँ उसे उसका वास्तविक लक्ष्य याद दिलाती है।

3. गद्य की भाषा विचारपरक, विश्लेषणात्मक एवं सक्षम है।

4. साहित्य को 'भावयोग' की संज्ञा दे उसका महत्व स्थापित किया गया है।

5. शुक्ल जी की यह समन्वयकारी दृष्टि साहित्य में उनके 'कद' को स्थापित करती है।

बहुत अच्छा

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

संदर्भ व प्रसंग: उपरोक्त पंक्तियाँ आचार्य शुक्ल के निबंध 'श्रद्धा भक्ति' से ली गयी है जहाँ श्रद्धा के महत्व को बतलाया जा रहा है।

व्याख्या: कर्म का महत्व कर्त्ता के माध्यम से ही समाज में परिलक्षित होता है। कर्म तो वस्तुत: अमूर्त होता है और उसे मूर्तवान बनाता है कर्त्ता। कर्त्ता के महत्व से ही उसके कर्मों का अनुकरण समाज से किया जाता है जिससे समाजिक कल्याण की सिद्धि होती है। यह तभी संभव है जब कर्त्ता के प्रति व्यक्ति के मन में श्रद्धा का भाव हो।

टिप्पणि: श्रद्धा जैसे पवित्र मनोभाव की सामाजिक उपयोगिता की व्याख्या की गयी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

2. आचार्य शुक्ल की शैली वैज्ञानिक है जहाँ आरम्भ में विचार दिया गया है तत्पश्चात व्याख्या

3. सूत्र शैली का प्रयोग ("क्रोध से बढ़कर कर्म का ... स्मारक नहीं।")

4. भाषा तत्समी है।

5. सुगठित वाक्य विन्यास एवं विचारों का क्रमबद्ध निरूपण।

बहुत अच्छा

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय–भारत–किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

संदर्भ व प्रसंग: प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कंदगुप्त से ली गयी हैं जहाँ बौद्ध सिंहल के राजकुमार धातुसेन भारत की महत्ता बतला रहे हैं।

व्याख्या: भारत अपने ज्ञान-विज्ञान के कारण सदैव विश्व में अग्रणी रहा है और सदैव यह सभी के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। भारत अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण सदैव मानव कल्याण हेतु अग्रसर रहा है।

टिप्पणी: ① नवजागरण की चेतना
② भाषा तत्सम (वसुन्धरा प्रेम-पाश)
③ विदेशी के भारत का महत्व

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

सं व्याख्या: नारी स्वातंत्र्य की चेतना को अभिव्यक्त किया गया है जहाँ नारी को किसी पुरुष के साथ ही जोड़कर उसकी पहचान निरूपित नहीं की जाती थी, वह कार्यक्षेत्र मे भी उसके कंधे से कंधा मिलाकर चलेगी।

टिप्पणी: ① नारीवादी दृष्टिकोण
② सामाजिक व लैंगिक न्याय का समर्थन
③ नारी आत्मनिर्भरता पर बल

02/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation